INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA
ISSN 2454-8707 VOLUME-II,ISSUE-IV, DEC-2016

कृष्ण–कथा का विकास आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 फौज़िया नाज़
ऐसि0प्रो0, हिन्दी विभाग, स्वामी सुखदेवानन्द महाविद्यालय, शाहजहांपुर

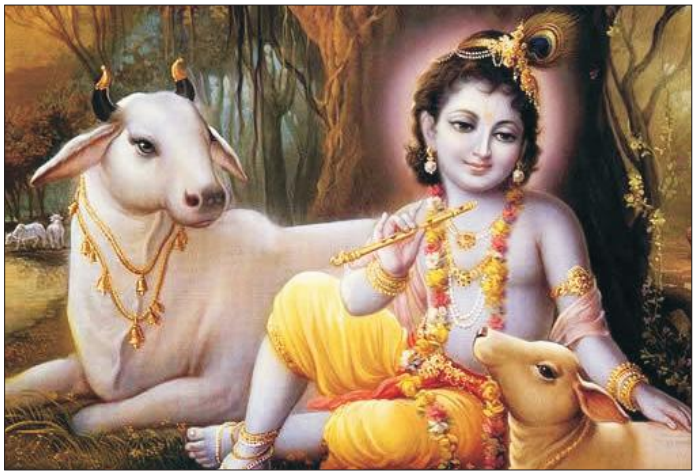

प्रागेतिहासिक काल से लेकर अब तक लीला पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण के अलौकिक व्यक्तित्व की कहानी यत्र–तत्र विखरी पढ़ी है। कृष्ण काव्य परम्परा के उद्भव और विकास का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि कृष्ण द्वापर के दिव्य पुरूष है शायद लीला दिखाने के लिए उनका अवतार हुआ है सत्य तो यह कि सगुण भक्ति के आराध्य देवताओं में श्रीकृष्ण का स्थान सर्वोपरि है, उनकी चर्चा ऋग्वेद से लेकर महाभारत, पुराण, संस्कृत पालि प्राकृत अपभ्रंश से हिन्दी में हुयी है। नटवर नागर कृष्ण भारतीय पुराण और इतिहास दोनों में बहुचर्चित है।

हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्य की सृष्टि से पूर्व संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य में कृष्ण भक्ति की रचनाएं मिलती है। यद्यपि कृष्ण काव्य का आधार श्रीमदभगवत है तथापि उसे भागवत का अनुवाद नहीं कहा जा सकता। कृष्ण चरित्र के वर्णन में इन कवियों ने मौलिकता का परिचय दिया है जहाँ भागवत के कृष्ण लोक–रक्षक के रूप में दिखाई दिये है वही भक्त कवियों ने उसे लोकरंजन के रूप में अधिक उभारा है। समय के साथ–साथ कृष्ण के स्वरूप में भी अन्तर आता गया। कृष्ण परिवेश के अनुरूप परिवर्तित होता रहा उनके स्वरूप का यह परिवर्तन प्रयत्न साध्य नहीं है अपितु समय के साथ–साथ सम्प्रदाय का समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है। कृष्ण का सम्बन्ध प्रत्येक काल के साहित्य एवं सम्प्रदाय में रहा है। अतः कृष्ण के स्वरूप में अन्तर आना स्वाभाविक था। 12 शताब्दी में जयदेव के 'गीतगोविन्द' में राधा–कृष्ण की लीलाओं पर आधारित एक पूर्ण विकसित काव्यय का रूप मिलता है। इस पुस्तक के बारे में कवि ने स्वयं लिखा–यदि हरि का स्मरण करके मन को सरस रखना चाहते हो और यदि विलास कलाओं के प्रति कुतुहल हो तो इस जयदेव भारती की मधुर कोमल कान्त पदावली का श्रवण करो।[1] सच तो यह है कि गीतगोविन्द में गोपिकाओं के राधा–कृष्ण के बिहार का रोचक वर्णन हुआ है। इसमें सम्भोग और विप्रलम्भ श्रृंगार के विविध पंक्षों का अनुपम चित्रण हुआ है। इस सम्बन्ध में डॉ0 हौसिला प्रसाद सिंह लिखते है कि–कला माधुरी और भाव प्रवणता की दृष्टि से गीतगोविन्द समस्त संस्कृत साहित्य में अपने ढंग का बेजोड़ ग्रन्थ है।[2]

यद्यपि कृष्ण काव्य संस्कृत से रचा जा रहा था किन्तु वास्तविक रूप से 12 शती के उपरान्त ही कृष्ण काव्य की प्रयुरता दिखाई पड़ती है। भक्ति काल में सूरदास, नंददास, कुंभनदास, कृष्णदास परमानंददास, छीत स्वामी, गोविन्द स्वामी, हित–हरिवंश, गदाधर भटट, स्वामी हरिदास, रसखान, ध्रुवदास, मीराबाई आदि कवियों ने कृष्ण काव्य को समृद्ध किया। निसन्देह भक्ति काल ही कृष्ण काव्य का स्वर्ण युग है। भक्तिकाल के बाद रीतिकाल में समय एवं परिस्थति के अनुरूप कृष्ण काव्य में बड़ा परिवर्तन हुआ है, अब राधा–कृष्ण की आड़ में मानवी श्रृंगार का प्रचलन हो गया है। कृष्ण और राधा सामान्य नायक–नायिका के रूप में दिखाई पड़े है। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य का जो अंश पराधीनता के युग में लिखा गया उसमें निहित भावनाओं का एकमात्र उद्देश्य दासता की बेड़ियों को तोड़कर जन मानस को उन्मुक्त वातावरण एवं बहुमुखी विकास की और अग्रसर करना था। उसके विपरीत स्वातन्त्रयोत्तर काल की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के विविध आयाम मुखरित होते रहे है। उक्त परिवर्तन को दृष्टिगत करके हम आधुनिकहिन्दी साहित्य के कृष्ण काव्य में विकसित कृष्णकथा को दो मुख्य भागों में विभक्त कर सकते है–

1. स्वतंत्रापूर्व आधुनिक हिन्दी–काव्य मे विकसित कृष्ण–कथा।
2. स्वतन्त्रयोत्तर आधुनिक हिन्दी काव्य में विकसित कृष्ण–कथा।

1. स्वतन्त्रतापूर्व आधुनिक हिन्दी काव्य में विकसित कृष्ण कथाः–

स्वतन्त्रता से पूर्व रचित आधुनिक कृष्ण–काव्य की सीमा अवधि सन् 1850 ई0 से लेकर सन 1947 ई0 तक विस्तीर्ण है। लगभग 180 वर्षो की इस अवधि में हिन्दी साहित्य में विभिन्न काव्य–वादों का जन्म, विकास तथा अवसान हुआ। इस काल सीमा में भारतेन्दुकाल, द्विवेदी काल छायावादी काल तथा प्रगतिवाद काल का कृष्ण–काव्य विवेच्य है।

स्वतन्त्रापूर्व आधुनिक कृष्ण–काव्य निर्माताओं में सर्वप्रथम एवं महत्वपूर्ण स्थान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है। इनकी कृष्ण भक्ति सम्बन्धी अनेकानेक रचनायें मिलती है, जिनमें प्रमुख है–प्रेममालिका, कार्तिक स्थान, प्रेमाश्रुवर्णन, प्रेमतरंग प्रेम प्रलाप, होली, मधु मुकुल, कृष्णा चरित

प्रेमपचासा आदि। भारतेन्दु के सहयोगियों में मुख्य रूप से सुमेर सिंह साहबजाद, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन प्रताप नारायण मिश्र, राधा कृष्ण दास, बाल मुकुन्द गुप्त, श्रीधर पाठक, सुधाकर द्विवेदी, राधा चरण गोस्वामी, राधाकृष्ण देव सिंह 'गोप' आदि थे।

भारतेन्दु तथास उनके सहयोगियों के पश्चात काल क्रमानुसार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनके समकालीन साहित्यकारों का स्थान है। द्विवेदी युगीन कृष्ण–काव्य रचयिताओं में अयोध्या सिंह उपध्याय मैथिली शरण गुप्त, जगन्नाथ दास रत्नाकर, ज्वाला प्रसाद मिश्र, सत्य नारायण कविरत्न आदि प्रमुख है।

स्वतन्त्रापूर्व कृष्ण काव्य निर्माताओं में उक्त कवियों के अनन्तर राधेश्याम कथावाचक का कृष्णायन' भी उल्लेखनीय है। इस काव्य–रचना के पश्चात सन् 1938 ई0 में अनूप शर्मा रचित 'फेरि मिलिवो' प्रकाशित हुआ। इन काव्यों में कृष्ण के ईश्वरीय रूप को प्रधानता मिली है और मानवी रूप को गौण इसके पश्चात द्वारिका प्रसाद मिश्र' ने रामचरितमानस की रीति पर 'कृष्णायन' सन 1943 में सर्जना की। 'कृष्णायन' का मुख्य स्त्रोत महाभारत श्रीमद्भागवत है। इसमें को समाज सुधारक, लोकनायक तथा लोक व्यावस्थापक के रूप में चित्रित किया गया है। कृष्णकथा के विकास में इस कृति का विशेष महत्व है।

राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने सन 1946 ई0 में कुरूक्षेत्र और बाद में 'रश्मिरथी' नामक कृष्ण प्रबन्ध काव्यों की रचना की। जिनमें उनके योद्धा, युगपुरूष, न्यायवक्ता रूप का वर्णन किया गया है। कुरूक्षेत्र में न तो दर्शन है और न कोई चमत्कार। यह एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय ही जो मनुष्य के स्तर पर चढ़कर बोल रहा है। इस तरह श्रीकृष्ण आगे श्रीकृष्ण आगे चलकर युग स्रष्टा रूप में चिजित किये जाने लगे।

2. स्वातंयोत्रार आधुनिक हिन्दी काव्य में विकसित कृष्ण कथा :–

सन् 1947 ई0 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रीय मानस में परिवर्तन के साथ ही हिन्दी–साहित्य में भी एक नये अध्याय का श्रीगणेश हुआ साहित्यिक परम्पराओं की भी बेड़िया हटने से साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में नूतन प्रयोग आरम्भ हुये और वह प्रक्रिया अब तक गतिशील है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1949 ई0 में तुलसीराम शर्मा ने कृष्ण के जीवन चरित्र को आधार बनाकर 'पुरूषोत्तम' नामक प्रबन्ध काव्य की सर्जना की। श्रीरमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने ब्रजभाषा में 'उद्धव–गोपी संवाद' तथा 'विनय शतक' की रचना की।इन कृतियों में कृष्ण के चरित्र को आधुनिक सन्दर्भ में वर्णित करने का सुन्दर प्रयोग प्रयास किया गया है।

सन् 1953 ई0 में राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह ने 'राधा श्रीकृष्ण' नामक काव्य–ग्रन्थ का प्रणयन किया। इसके पश्चात कृष्ण कथा में सबंधित डॉ0 धर्मवीर भारतीय की दो कृतियां क्रमशः 'अन्धयुग' प्रकाशन में आयी। अन्धायुग नाटक में महाभारत कालीन परिस्थितियों तथा कृष्ण के बौद्धिक स्वरूप का विशलेषण किया गया है। 'कनुप्रिया' कृष्ण के भावात्मक स्वरूप का ही एक रूप है। कृष्ण कथा से सबंधित चार खण्ड काव्यों द्रौपदी, सुविरा, उत्तसजय और सुवर्णा की रचना कविवर नरेश शर्मा ने की है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि प्रस्तुत काव्य सुवर्णा की अवतारणा भी महाभारत की महती भूमिका में हुई है। वस्तुतः द्रौपदी में महाभारत के युद्ध की पूर्व–पीठिका प्रस्तुत की गई है।

कृष्ण कथा की परम्परा में योगदान प्रदान करते हुए संत कृपालुदास ने 1954 में प्रेम रस मदिरा' की रचना की वर्तमान युग के प्रसिद्ध कवि वियोगी हरि ने कृष्ण भक्ति काव्य 'अनुराग मंजरी' की रचना की महाभारत के कथा प्रसंगो को ग्रहण कर नरेश मेहता ने 'महाप्रस्थान' नामक खण्ड काव्य की सर्जना की सन् 1974 ई0 रचित इस काव्य ग्रन्थ में श्रीकृष्ण के चरित्र को नये आयामों से उदघाटित किया गया है। उनकी यह लीलामयता उनके चरित्र निरूपण में भी विद्यमान है। श्रीकृष्ण के चरित्र में कल्पना और मिथक का योग है। यह योग है गोपाल और पार्थ सारथी का।

महाकवि तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' की शैली के आधार पर भी प्रियदर्शी महाराज ने श्रीकृष्ण चरित मानस' नामक प्रबन्ध काव्य की सर्जना की। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व आर0सी0 प्रसाद सिंह रचित 'श्रीकृष्ण चेतना' नामक एक लम्बी कविता प्रकाशित हुई है, जिसमें कृष्णवृत को भावबोध के स्तर पर प्रस्तुत किया है। इसमें नयी युग–चेतना लेकर कुरूक्षेत्र तक का प्रसंग वर्णित है। कवि स्वाभाव पूर्ण स्वच्छन्दावदी है, अतएव इसी वृत्रि का इनके काव्य में पूर्ण विकास हुआ है।

कृष्णकाव्य विषयक उक्त रचनाओं के अतिरिक्त नयी कविता में अनेक स्फुट कवितायें प्रकाशित होती रही है। उनमें उदयशंकर भट्ट रचित 'युग पुरूष से' गंगा प्रसाद श्रीवास्तव प्रणीत 'जन्मदिवस पर' केशु की रचना 'सूर्यपुत्र के तीन मर्म कथन' लक्ष्मीकान्त वर्मा की क्यूरियो मार्ट में 'अर्जुन की तलाश' तथा दुष्यन्त कुमार की 'तदात्मान' सृजाम्यहम्' उल्लेखनीय है। नई कविताओं में कृष्ण का चरित्र निरूपण इतना अधिक नहीं हुआ है, जितना वह युग की विभिन्न स्थितियों का प्रतीक बना है। एक ओर कृष्ण को महामानव मर्यादापालक, राष्ट्रनायक, प्रभु आदि रूपों में चित्रित किया गया है तो दूसरी और उन्हें अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधि तथा नेता छली प्रपंची, कामुक पुरूष आदि रूपों में भी चित्रित किया है। स्पष्ट है कि समय–समय पर श्रीकृष्ण के चरित्र विकास के अनेक स्तर प्राप्त होते है। कृष्ण–चरित्र प्रत्येक युग में समय की आवश्यकता एवं परिवेश के अनुरूप परिवर्तित होता रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जयदेव : गीतगोविन्द पृ0–1/3
2. डॉ0 हौसिला प्रसाद सिंह : कृष्ण कथा : उदभव और विकास पृ0–36
3. रंजन : भारतेन्दु युगीन काव्य में भक्तिधारा : पृ0–260 से 280 तक
4. मुरारी लाल वर्मा : हिन्दी परम्परा का स्वरूप विकास पृ0–199–210
5. रामधारी सिंह दिनकर : कुरूक्षेत्र निवेदन, पृ0–2
6. धर्मवीर भारती : कनुप्रिया : भूमिका, पृ0–7
7. नरेन्द्र शर्मा : सुवर्णा : निवेदन, पृ0–
8. नरेश मेहता : महाप्रस्थान : पृ0–29
9. नवचेतना : अंक 17, सन् 1961 ई0
10. मुरारीलाल शर्मा : हिन्दी कृष्ण काव्य की परम्परा का स्वरूप विकास,पृ0–310–1